

महासागरी की ऊपरी सतह का तापमान ऋतु परिवर्तन के साथ साथ भी परिवर्तित होता रहता है। शीतोष्ण कटिबंध में समुद्री जल की ऊपरी सतह के ग्रीष्म एवं शीत ऋतु के तापमान में  $90^{\circ}\text{F}$  ( $32^{\circ}\text{सेण्टीग्रेट}$ ) तक का अन्तर पाया है। ध्रुवस्थ रेखा एवं ध्रुवों के समीप यह अन्तर बहुत कम होता है। महासागरी की ऊपरी सतह के तापमान में दैनिक तापान्तर शायद ही 10 सेण्टीग्रेड अधिक होता है।

महासागरीय तापमान का लम्बवत वितरण चूंकी सूर्य सागरीय जल की ऊपरी का मूल स्त्रोत है। अतः गहराई के बढ़ने पर सागरीय जल का ताप मान घटता है। सागरीय सतह से 100 मी० की गहराई तक का तापमान सागरीय सतह के लगभग अनुसृत रहता है। लेकिन इसके बाद जैसे जैसे गहराई बढ़ती जाती है, जैसे जैसे सागरीय जल का तापमान कम होता जाता साधारणतया सागरीय सतह के प्राप्त होनेवाली सूर्य ऊष्मा का लगभग 90 प्रतिशत भाग सागर सतह से 20 मी० की गहराई तक अवशोषित कर लिया जाता है। शेष 10 प्रतिशत सूर्य ऊष्मा 20 से 200 मी० की गहराई पर अवशोषित हो जाती है। इस प्रकार सूर्य की किरणें सागर के अन्दर 200 मी० तक प्रवेश कर जाती हैं। 200 मी० से अधिक गहराई पर सूर्य की किरणों का कोई प्रभाव नहीं पहुँच पाता। सम्भवतः कुल सागरीय जल का लगभग 80% भाग ऐसा होता है तापमान स्थिर

रूप से 50 सेग्रेड से कम रहता है।

प्र० सागरीय लहर अपरदन को करती है।  
अपरदन से निमित्त स्थलाकृतियों का सर्चित  
वर्णन कीजिए

309 सागरीय जल  
अपरदन के साधनों में सागरीय जल विशिष्ट  
स्थान है। सागरीय जल महासागरों का जल  
स्तर द्वारा ज्वार भौट तथा सूनामिस के  
रूप में गतिशील रहता है।

सागरीय अपरदन →  
सागरीय लहरों चार प्रकार से तटवर्ती भूमी का  
अपरदन करती हैं।

(1) अपघर्षण → कंकड़ पत्थर बालू आदि संस्राल  
लहर तट पर लगातार पहर करती हैं।  
यह क्रिया बहुत प्रभावकारी होती है। किनारों के  
अतिरिक्त वे तली का भी अपरदन करती हैं।

(2) संरक्षण → चूना पत्थर खडिया डोलोमाइट  
प्लिप्सम आदि शैलों वाले तटीय भागों  
में लहरों द्वारा घुलन क्रिया महत्वपूर्ण है।

(3) स्थानान्तरण → अधः प्रवाह तथा तरंगिकाओं  
के साथ तट से अपरदित पदार्थ  
समुद्र में पहुँचता है। जब तरंगों के साथ  
प्रवाहित कंकड़ पत्थर आदि

(4) जलीय दब की क्रिया → तरंगों के  
तखाने से तटीय  
शैलों प्रवाह के दबाव से हटती हैं।

वारसेक्टर के अनुसार  $\rightarrow$  51मीटर यन्त्र से यह पता चला है 5.5 फिट ऊंचरी लहर प्रति का फुट क्षेत्र पर 600 का दबाव डालती है। अधिक ऊंची लहर भयंकर दाब डालती है जो 100 टन से अधिक भारी शिलाओं को तोड़ सकता है। लहरों के कार्य की सीमा ~~से~~ शेपड के अनुसार  $\rightarrow$  30-40 फिट की गहराई तथा जॉन्सन के अनुसार  $\rightarrow$

600 फिट तक है।

जल गाते क्रिया  $\rightarrow$  तरंगी जब सागर तट पर सीधे टकराती है ~~वहाँ~~ शैल टूटकर बिखरने लगती है इस क्रिया में केवल जल का योग्य रहता है सागरीय अपरदन को प्रभावित करने वाले कारक

सागरीय अपरदन को प्रभावित करने वाले कारक निम्नांकित हैं।

- ① तरंग शक्ति लहरों की शक्ति दो वातों पर निर्भर करती है।
- ① वातों में क्षेत्र जितना अधिक विस्तृत होगा लहरों का आकार व शक्ति भी उतनी अधिक होगी
- ② लहरों के साथ मिल

21/4/22

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया